हरियाणा में जुझारू छात्र आन्दोलन

कैम्पसों में छाई चुप्पी टूटने लगी है

पंकज

मंहगी शिक्षा, बढ़ती बेरोजगारी, दोहरी शिक्षा प्रणाली और ऊपर से नादिरशाही तंत्र, तुगल की प्रशासन – ये छात्र-युवा आक्रोश को सुलगा रहे है। कभी भी यह विस्फोट का रूप धारण कर सकते हैं। ऊपरी तौर पर कैम्पसों में व्याप्त सन्नाटा भविष्य में उठ खड़े होने वाले किसी गंभीर तूफान का संकेत दे रहा है। देश के कैम्पसों में समय-समय पर स्वयंस्फूर्त तरीके से उठ खड़े होने वाले आन्दोलन बता रहे हैं कि सब्र के बांध की चौहद्दियां अब टूटने वाली हैं।

हरियाणा के कुछ जिलों में पिछले दिनों हुए छात्र आन्दोलन को यदि हम देखें तो कहा जा सकता है कि यदि इस विस्फोट के लिए छात्रों ने पहले से तैयारी की होती तो यह आन्दोलन भविष्य के तूफानों की अगवानी की पूर्व पीठिका तैयार कर जाता। मात्र कुछ राहतें नहीं, बल्कि एक बड़ी जीत हम हासिल कर पाते। दो दिन सड़कों पर निकल पड़े छात्रों ने सिर्फ विश्वविद्यालय प्रशासन ही नहीं, बल्कि सत्ताधारियों की भी नींद हराम कर दी थी।

छात्रों के जबरदस्त विरोध के कारण महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय(रोहतक) को परीक्षाओं में तीन सेट प्रणाली लागू करने के अपने फरमान को वापस लेने पर मजबूर होना पड़ा। अड़ियल रुख अपनाये हुए वि. वि. प्रशासन को छात्रों से बात करने के लिए आखिरकार झुकना पड़ा। वि. वि. प्रशासन को कहना पड़ा कि "नकल रोकने के लिए" बनायी गयी यह तीन सेट प्रणाली अगले शिक्षण सत्र से लागू की जायेगी।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के इस निर्णय के आते ही – कि इस बार स्नातक और परास्नातक की परीक्षाओं में एक प्रश्न पत्र के तीन सेट होगें – छात्र-छात्राएं सड़क पर उतर पड़े। 8 जनवरी की सुबह से ही महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले सभी जिलों के छात्रों ने वि. वि. के इस हिटलरी फरमान के विरोध में आवाज बुलंद करना शुरू कर दिया। देखते- देखते आन्दोलन इतना विस्तारित हो चला कि स्थानीय अखबारों कों लिखना पड़ा की "हरियाणा में काफी अर्से बाद किसी मुद्दे पर छात्र राजनीति गरमाई है।"

छात्रों की आवाज को कुचलने के लिए पुलिस ने बर्बर लाठी चार्ज किया। रोहतक में दिल्ली बाईपास पर एकत्रित छात्रों को , जो कि विश्वविद्यालय प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारियों से मिलने की मांग कर रहे थे, पुलिस ने दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। सड़क पर शातिपूर्वक बैठे छात्रों पर पुलिस ने जमकर लाठियां बरसाईं। आस-पास की छत पर जमा छात्रों को भी उतार - उतारकर पीटा गया। उत्तेजित छात्रों ने पुलिस से मोर्चा लिया और जबाबी पथराव किया। हरियाणा पुलिस को इस तरह छात्रों ने बताया कि छात्र असंतोष को लाठियों-गोलियों से दबाया नहीं जा सकता।

नौ जनवरी को रेवाड़ी , नारलौल , महेन्द्रगढ़ , फरीदाबाद , झज्जर तथा सोनीपथ में शानदार छात्र प्रदर्शन हुए। सोनीपत को छोड़ बाकी जिलों में आन्दोलन स्वतःस्फूर्त ढंग से आगे बढ़ा।

सोनीपत जिले में आन्दोलन में दिशा छात्र संगठन ने पहलकदमी लेकर एक छात्र संघर्ष समिति का निर्माण किया , जिसमें सभी छात्रों को साथ लेकर चलने का प्रयास किया गया। वि. वि. कुलपति के इस बयान से – कि वह छात्रों के दबाव के आगे नहीं झुकेंगे – आक्रोशित छात्रों को लेकर छात्र संघर्ष समिति ने सी. आर. ए. कालेज परिसर में एक सभा की। पुलिस की सभा भंग करने की कुत्सित मंशा के बावजूद सभा शानदार ढंग से सम्पन्न हुई। इस सभा में वक्ताओं ने कुलपति के तानाशाही रवैये तथा पुलिसिया दमन की कड़े शब्दों में निंदा की। छात्र संघर्ष समीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे दिशा छात्र संगठन ने स्पस्ट किया कि मुद्दा सिर्फ तीन सेट प्रणाली नहीं है, छात्रों का गुस्सा कुलपति और वि. वि. प्रशासन के नादिरशाहाना रवैये और छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर कुठाराघात के खिलाफ है। छात्र संघर्ष समिति ने इस मौके पर विश्वविद्यालय कुलपति के नाम एक ज्ञापन प्राचार्य को सौंपा।

अन्याय के खिलाफ उठ खड़े हुए छात्रों के गुस्से को स्वर देते हुए दिशा छात्र संगठन ने एक पर्चा निकाला। जिसमें यह सवाल उठाया गया कि जब वोट देकर सरकार चुनने का अधिकार हमें दिया गया है तो हमारी शिक्षा नीति के निर्धारण में हमारे मत की उपेक्षा करना हमारे जनतांत्रिक अधिकार को छीनना नहीं तो और क्या है। नकल रोकने की वि.वि. प्रशासन की "सदिच्छा" पर चोट करते हुए कहा गया कि छात्र को नकल करने पर अपराधी घोषित कर दिया जाता है, जबकि असल अपराधी तो वह शिक्षा व्यवस्था है जो छात्र को नकल करने के लिए मजबूर करती है। आम जनता के बेटे-बेटियों की योग्यता को उनकी डिग्री और अंकों से मापा जाता है। यह शिक्षा रोजगार की कोई गारण्टी नहीं देती। शिक्षा प्राप्त करना बोगस, उबाऊ, नीरस काम बन चुका है। पूरी शिक्षा व्यवस्था इतनी निरंकुश और मानवद्वेषी हो चुकी है कि हर साल सैकड़ों मासूम छात्र थक-हारकर निराशा में आत्महत्या कर लेते हैं। ऐसी शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ बगावत करना पूरी तरह न्यायसंगत है।

दरअसल, हरियाणा के तमाम जिलों में फूटा छात्रों का यह गुस्सा पूरी शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ आम छात्र के दिल में गहरे तक बैठी नफरत का ही इजहार था। नेतृत्वहीनता के बावजूद आन्दोलन फैलता जा रहा था,

छात्र लम्बी लड़ाई के लिए कमर कस रहे थे। दो दिन में ही वि. वि. प्रशासन छात्रों के एकजुट विरोध से भयभीत हो उठा।

छात्रों की इस फिलहाली जीत से वि. वि. प्रशासन के नापाक मंसूबों को धूल चाटनी पड़ी है। लेकिन यदि छात्रों की चौकसी ढीली पड़ी तो फिर किसी हिटलरी फरमान का खतरा सिर पर मंडराने लगेगा। ऐसा नहीं है कि इस जीत से शिक्षा व्यवस्था में कोई बड़ा बदलाव हो जायेगा या जनविरोधी शिक्षा नीति की दिशा उलट जायेगी। यह जीत एक बार फिर यह याद दिलाती है कि मेहनतकशों के बेटों के सामने संघर्ष के अलावा और कोई रास्ता नहीं है, जिससे कि वह अपने दुखों से निजात पा सके।

इस आन्दोलन में छात्राओं की सक्रिय शिरकत महत्वपूर्ण रही। छात्राओं ने अपने छात्र साथियों के साथ जुलूस-प्रदर्शन में हिस्सा लिया ही, तमाम स्थानों पर छात्राओं ने अपने विद्यालयों में पहलकदमी ली। सोनीपत के हिन्दू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने संघर्ष में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने के साथ ही अपने महाविद्यालय में कक्षाओं का बहिष्कार किया और शहर में शानदार जुलूस निकाला।

इस विस्फोट ने भविष्य की दिशा को इंगित कर दिया है। यह आन्दोलन यह शिक्षा दे रहा है कि महंगी होती शिक्षा और लगातार घटते रोजगार के इस दौर में हमें भविष्य में होने वाले विस्फोटों के लिए खुद को अभी से तैयार करना होगा। नेतृत्वहीनता और स्वतःस्फूर्तता की स्थिति में आन्दोलन बिखर जाता है, एक अराजक भीड़ बनकर रह जाता है। इसलिए आज सबसे जरूरी है कि छात्रों को अपने भीतर से सही, स्पष्ट वैज्ञानिक विचाधारा से लैस क्रान्तिकारी छात्र नेतृत्व को पैदा करना होगा और क्रान्तिकारी छात्र संगठन खड़े करने होंगे।

अमित की जिन्दगी को किसका ग्रहण लग गया?

प्रवीण

अमित नहीं रहा। अमित पूनिया ने आत्महत्या कर ली। वह 16 वर्ष का था। वह जीना चाहता था। उसे नहीं जीने दिया गया। बड़े होकर बड़ा आदमी बनना है—एक ही रट। मां-बाप, नाते-रिश्तेदार, पास-पड़ोसी, सर-मैडम। एक ही रट—बड़ा आदमी बनना है। नहीं मैं बड़ा आदमी नहीं बनना चाहता। क्यों? आखिर क्यों? मुझे गणित नहीं आता। ट्यूशन कर लो बेटा। नहीं मैं गणित नहीं समझ सकता। क्यों? मैं जानता हूं मैं नहीं समझ सकता। पढ़ो बेटा बिना पढ़े तो काम नहीं चल सकता। मैं गणित नहीं पढ़ सकता। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं। पढ़ो! नहीं पढ़ो! नहीं नऽऽहींऽऽ...यह लो तुम्हारी गणित और यह लो.....

अमित नहीं रहा। अमित पूनिया ने आत्महत्या कर ली। वह 16 वर्ष का था। वह जीना चाहता था। उसे नहीं जीने दिया गया।

यह किसी नाटक का दृश्य नहीं, बल्कि हमारे इर्द-गिर्द आये दिन ऐसी घटनायें घटती हैं। हम अखबार पढ़ते हैं। थोड़ी देर के लिए ये हमें परेशान करती हैं और कुछ समय बाद भूल जाते हैं। इधर पिछले कुछ वर्षों में ये घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। परीक्षा-परिणाम आने पर, प्रवेश न मिलने पर, टीचर की या मां-बाप की डांट खाने पर कुछ इसी रूप में आत्महत्याओं की खबरें आती हैं। आखिर वे कौन से कारण हैं कि ये किशोर जिन्दगी से इतना निराश हो जाते हैं और आत्मघाती रास्ते पर आगे बढ़ जाते हैं।

वह कौन है जो इन किशोरों को-युवाओं को, जो जीना चाहते थे, आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर रहा है। वह कौन है जिसने इनकी जिन्दगी के उजाले को छीन लिया? वह कौन है जिसने नई पीढ़ी के सपनों, कल्पनाओं, आकांक्षाओं को कैद कर लिया है और जो उनके तर्क और विवेक पर हर क्षण प्रहार कर रहा है। वह कौन है जो इनके जीने की ललक पर तुषारापात कर रहा है। आखिर वह हत्यारा कौन है जो हमारी संवेदनाओं को मार रहा है कि अमित पूनिया की आत्महत्या को हम महज एक खबर के रूप में पढ़ जाते हैं और भूल जाते हैं कि उस हत्यारे की शिनाख्त करना कितना जरूरी है। भूल जाते हैं कि वह हत्यारा हमारे घर के पिछवाड़े भी घात लगाये बैठा है।

अमित का गणित पढ़ने में मन नहीं लगता था। हो सकता है उसकी संगीत में रुचि हो। वह कविता लिखना चाहता हो। उसे दुनिया की सैर करना पसन्द हो। उसकी बागवानी में रुचि हो। क्यों पढ़े वह गणित? और कौन बच्चा है जो राजी खुशी स्कूल सिर्फ पढ़ने जाता है। हमारी स्कूली पढ़ाई ही ऐसी है, जिसमें हर विषय को इतना गूढ़, वायवीय, अपठनीय बना दिया जाता है। परीक्षा प्रणाली ऐसी है कि यदि आप परीक्षा में अव्वल स्थान नहीं प्राप्त करते तो आप नकारा हैं, कूड़ा हैं। शिक्षा को पूरी तरह से जीवन से काट रखा है। छात्र रोचक विषयों को भी तोते की तरह रटने के लिए अभिशप्त हैं।

किसी छात्र से पूछा जाये कि वह क्यों पढ़ना चाहता है तो उसका उत्तर होगा—एक अच्छी नौकरी के लिए, बड़ा आदमी बनने के लिए। बड़ा आदमी—यानी गाड़ी, बंगला और ढेर सारा पैसा। वह किशोर आपको बतायेगा कि यदि आपके पास पैसा है, तो जमाने में आपकी इज्जत है, आप जी सकते हैं, नहीं है तो कुछ भी नहीं। वह गुनगुनाता है 'दुनिया जाये भाड़ में, ऐश करो तुम'।